Notification No.: 554/2024 (Dated: 14-02-2024)

Name of Scholar: TAHSIN MAZHAR

Name of Supervisor: PROF. CHANDRADEV YADAV

Name of Department: HINDI

Topic of Research: 'KAMAYANI' AUR 'SHARDA MANGAL' MEIN STRI-CHHAVIYON KA ADHYAYAN

संक्षिप्त शोध-सार (Findings)

बीज शब्द: छायावाद, स्वच्छंदतावाद, स्त्री-विमर्श, कामायनी, शारदामंगल, जयशंकर प्रसाद, बिहारीलाल चक्रवर्ती

नवजागरण का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसने तत्कालीन दौर में भारतीय विचारों की दिशा तय की और आधुनिक भारत की नींव तैयार की। भारतीय समाज की कुरीतियों से मुक्ति के साथ-साथ स्त्री-प्रश्न भी नवजागरण का एक प्रमुख मुद्दा था। यह वही दौर था जब स्त्रियों की मुक्ति के आंदोलन की शुरुआत हुई। तत्कालीन साहित्य में भी स्त्री-मुद्दे प्रमुखता से उभरे। भारतीय काव्य धारा में भी ऐसा नजर आता है। बिहारीलाल चक्रवर्ती की बांग्ला काव्य कृति *'शारदामंगल'* और जयशंकर प्रसाद की हिंदी काव्य-रचना *'कामायनी'* भी नवजागरण और उससे उपजी तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियों से प्रेरित हैं। इन दोनों काव्य रचनाओं के केंद्र में स्त्रियां हैं। इस शोध में दोनों कृतियों का स्त्री-छवियों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

'शारदामंगल' में बिहारीलाल चक्रवर्ती ने शारदा के रूप में एक ऐसी स्त्री की छवि को प्रस्तुत किया है, जो करुणा, प्रेम, सौंदर्य आदि गुणों से युक्त है। वह अपने अस्तित्व के प्रति सचेत है। बिहारीलाल चक्रवर्ती ने स्त्री को तुच्छ या बाधा के रूप में नहीं देखा है। उन्होंने स्त्री को पुरुष की प्रेरणा के रूप में स्थापित किया है। इसी तरह 'कामायनी' की श्रद्धा भी प्रेम, सौंदर्य, करुणा, त्याग के साथ-साथ पुरुष की प्रेरणा के रूप में दिखाई पड़ती है। दोनों काव्यों में स्त्री की आत्मचेतस, स्वतंत्र और नेतृत्वकारी छवि है।

इन स्त्री-चरित्रों का उत्स भारतीय वाङ्मय में दिखाई देता है। श्रद्धा, इड़ा और शारदा तीनों चरित्र पूर्व के भारतीय वाङ्मय में मिलते हैं। 'शारदामंगल' में शारदा सरस्वती का रूप है।

इस तरह से बिहारीलाल चक्रवर्ती और जयशंकर प्रसाद ने परंपरा से अपने चरित्रों की खोज की है। उन्होंने इन स्त्री-चरित्रों में नवीन चेतना का समावेश करते हुए उन्हें आधुनिक बना दिया है। वास्तव में बिहारीलाल चक्रवर्ती और जयशंकर प्रसाद ने भारतीय परंपरा में आधुनिकता की खोज की है।

भारतीय परंपरा में स्त्री-पुरुष का सहज साहचर्य रहा है। मध्यकाल में यह सहज साहचर्य विलासिता में बदल गया था। 'कामायनी' में मनु और श्रद्धा के माध्यम से पारंपरिक सहज साहचर्य को दिखाया गया है। 'शारदामंगल' में भी कवि ने स्त्री-पुरुष के इसी साहचर्य की कामना की है। पूर्व युग में पुरूष की तुलना में स्त्री को कमतर बताया गया। जयशंकर प्रसाद और बिहारीलाल चक्रवर्ती ने इनमें संतुलन स्थापित किया। उन्होंने स्त्री को महत्ता प्रदान की और उसे पुरुष की मार्गदर्शिका बताया। इस प्रकार से 'शारदामंगल' और 'कामायनी' के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि इन कृतियों में अभिव्यक्त हुई स्त्री-छवियां पूर्व की स्त्री-छवियों से भिन्न हैं। बांग्ला और हिन्दी साहित्य तथा समाज में आधुनिक युग के अनुरुप स्त्री-छवियों में हुए परिवर्तन 'शारदामंगल' और 'कामायनी' में दिखाई देते हैं।

इन दोनों काव्यों में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों ने स्त्री को घर-परिवार तक सीमित नहीं किया है। इनमें व्यक्तिगत दुःख औऱ आनंद को पूरे विश्व से जोड़ा गया है। पूरे मानव जाति के कल्याण और मानवता के विचार को प्रकट किया गया है और यह स्त्री-छवि के माध्यम से ही किया गया है। इस प्रकार से स्त्री विश्व-कल्याणी बनकर उभरी है।